

# NEXT IAS

## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

---

भारत का उत्तर-दक्षिण विभाजन:  
संघवाद के लिए एक संरचनात्मक चुनौती

---

[www.nextias.com](http://www.nextias.com)

## भारत का उत्तर-दक्षिण विभाजन: संघवाद के लिए एक संरचनात्मक चुनौती

### संदर्भ

- भारत का उत्तर-दक्षिण विभाजन अब चक्रीय नहीं बल्कि संरचनात्मक हो गया है, जिसके समाधान हेतु केवल क्रमिक नीतिगत सुधार पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए संस्थागत नवाचार की आवश्यकता है।

### उत्तर-दक्षिण विभाजन क्या है?

- यह व्यवस्थित सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं को संदर्भित करता है, जो निम्नलिखित क्षेत्रों के बीच विद्यमान हैं:
  - दक्षिणी/प्रायद्वीपीय राज्य: तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश
  - उत्तरी/हिंदी हृदयभूमि: उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़

### विभाजन का स्वरूप

- **आर्थिक असमानता:** दक्षिणी राज्यों की प्रति व्यक्ति आय उत्तरी राज्यों से 2-3 गुना अधिक है। जनसंख्या कम होने के बावजूद ये GDP में असमान रूप से अधिक योगदान करते हैं।
- **मानव विकास अंतर:** दक्षिणी राज्यों में साक्षरता, स्वास्थ्य परिणाम और लैंगिक सूचकांक बेहतर हैं। उत्तरी राज्यों में HDI से संबंधित संकेतक काफी पीछे हैं।
- **जनसांख्यिकीय विरोधाभास:** उत्तर में उच्च जनसंख्या वृद्धि और प्रजनन दर; दक्षिण में निम्न प्रजनन दर एवं वृद्ध होती जनसंख्या।
- **निर्वाचन क्षेत्र निर्धारण समस्या:** संसदीय सीटें जनसंख्या पर आधारित हैं।
  - उत्तरी राज्यों को अधिक सीटें मिलती हैं (अधिक राजनीतिक शक्ति), जबकि दक्षिणी राज्यों को आर्थिक योगदान के बावजूद कम प्रतिनिधित्व का जोखिम है।
  - इससे 'जनसांख्यिकीय शक्ति बनाम आर्थिक शक्ति' का असंतुलन उत्पन्न होता है।

### तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

- अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया जैसे संधीय देशों में आर्थिक और जनसांख्यिकीय प्रभुत्व प्रायः एक-दूसरे से सामंजस्यशील हैं।
- सोवियत संघ और यूगोस्लाविया जैसे मामलों में आर्थिक अल्पसंख्यक द्वारा राजनीतिक बहुसंख्यक को सब्सिडी देने से अस्थिरता उत्पन्न हुई।
  - भारत भी लोकतांत्रिक ढाँचे के अंदर इसी प्रकार के संरचनात्मक असंतुलन के जोखिम का सामना कर रहा है।

### उत्तर-दक्षिण विभाजन को सुदृढ़ करने वाले कारक एवं समाधान

- **राजनीतिक प्रतिनिधित्व में सुधार**
  - **डिग्रेसिव प्रोपोर्शनैलिटी अपनाना:** जनसंख्या आधारित प्रतिनिधित्व और राज्यों की समानता के बीच संतुलन स्थापित करना; जनसंख्या अधिक वाले राज्यों के प्रभुत्व को रोकना।

- **संघीय संस्थाओं को सशक्त करना:** अंतर-राज्य परिषद को पुनर्जीवित करना; परामर्श आधारित निर्णय-निर्माण सुनिश्चित करना; जनसांख्यिकीय न्याय के साथ राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना।
- **वित्तीय संघवाद एवं संसाधन समानता**
  - **वित्त आयोग अंतरण को सुदृढ़ करना:** गरीब राज्यों को अधिक समानता अनुदान देना; केवल जनसंख्या और आय दूरी ही नहीं, बल्कि मानव विकास सूचकांकों को भी मानदंड बनाना।
  - **GST क्षतिपूर्ति का युक्तिकरण:** उत्पादक राज्यों में राजस्व हानि की चिंताओं का समाधान; कर वितरण में न्याय सुनिश्चित करना।
  - **प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन:** जनसंख्या नियंत्रण, शासन सुधार और सामाजिक क्षेत्र परिणामों के लिए राज्यों को पुरस्कृत करना।
- **उत्तरी राज्यों में मानव पूंजी विकास**
  - **प्राथमिक क्षेत्र:** सार्वभौमिक विद्यालय शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना, और कौशल विकास।
    - मानव पूंजी की कमी क्षेत्रीय असमानता का मुख्य कारण है।
- **लक्षित क्षेत्रीय विकास**
  - **आकांक्षी जिला कार्यक्रम को सुदृढ़ करना:** BIMARU राज्यों के पिछड़े जिलों पर ध्यान केंद्रित करना।
  - **अवसंरचना निवेश:** परिवहन, ऊर्जा, डिजिटल कनेक्टिविटी।
  - **औद्योगिक विकेंद्रीकरण:** कम विकसित क्षेत्रों में उद्योगों को प्रोत्साहित करना।
- **सहयोगी एवं प्रतिस्पर्धी संघवाद**
  - **सहयोगी संघवाद:** नीति आयोग के माध्यम से केंद्र-राज्य सहयोग; केंद्रीय प्रभुत्व के बजाय नीति समन्वय।
  - **प्रतिस्पर्धी संघवाद:** शासन और सुधारों पर राज्यों को प्रतिस्पर्धा हेतु प्रोत्साहित करना।
  - **स्वायत्तता और समानता के बीच संतुलन हेतु 'नया संघीय समझौता' आवश्यक है।**
- **प्रवासन एवं श्रम एकीकरण का प्रबंधन:** अंतर-राज्य प्रवासियों के अधिकारों की रक्षा; कल्याणकारी योजनाओं की पोर्टेबिलिटी सुनिश्चित करना (*वन नेशन वन राशन कार्ड*); सामाजिक एकीकरण नीतियों को बढ़ावा देना।
- **दक्षिणी राज्यों में आंतरिक सुधार:** उन्नत राज्यों को भी राज्य के अंदर असमानता कम करनी होगी; श्रमिक वेतन और ग्रामीण समावेशन सुधारना होगा; विधि का शासन एवं शासन क्षमता को सुदृढ़ करना होगा।
  - समावेशिता के बिना विकास दीर्घकालिक स्थिरता को कमजोर करता है।

### दीर्घकालिक संरचनात्मक सुधार

- **विकेंद्रीकरण:** स्थानीय सरकारों (तीसरी श्रेणी) को सशक्त करना; अंतिम स्तर तक सेवा वितरण सुधारना।
- **संस्थागत सुदृढ़ीकरण:** न्यायिक दक्षता और प्रशासनिक सुधार।
- **सामाजिक परिवर्तन:** जाति और लैंगिक असमानता का समाधान; समावेशी सामाजिक नीतियों को बढ़ावा देना।

### निष्कर्ष

- उत्तर-दक्षिण विभाजन का समाधान किसी एक नीति उपकरण से संभव नहीं है। इसके लिए बहुआयामी रणनीति आवश्यक है, जिसमें वित्तीय समानता, राजनीतिक संतुलन, मानव विकास और संस्थागत सुधार सम्मिलित हों।

- अंतिम लक्ष्य केवल असमानता कम करना नहीं, बल्कि एक सुदृढ़ और लचीला संघीय ढाँचा निर्मित करना है, जहाँ समानता एवं दक्षता दोनों सह-अस्तित्व में हों।

Source: TH

### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत में क्षेत्रीय असमानताएँ एक विकासात्मक मुद्दे से बदलकर संघीय चुनौती का रूप ले चुकी हैं। उत्तर-दक्षिण विभाजन के संदर्भ में विवेचना कीजिए।

